Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 3 | (July - September 2026)

समकालीन हिन्दी साहित्य में महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन का प्रभाव व चित्रण

डॉ० दीपा पाण्डे [1], डॉ० पंकज प्रियदर्शी [2]
[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास, राजकीय महिला महा0 हल्द्वानी,
[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास, रा0 स्ना0 महा0 रामनगर

सारांश-

1920 से 1942 तक भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए महात्मा गाँधी ने तीन प्रमुख आन्दोलन चलाए, जिनमें 1920-22 असहयोग आन्दोलन, 1930-32 सविनय अवज्ञा आन्दोलन, 1942 भारत छोड़ो आन्दोलन। असहयोग आन्दोलन को गति प्रदान करने में साहित्यकारों , पत्रकारों की विशेष भूमिका रही। आजादी प्राप्त करने के लिए राजनैतिक आन्दोलन के साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों को दूर करने, महिलाओं की सामाजिक स्थिति व आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए भी आन्दोलन चलाए जा रहे थे। इन सबके व्यापक प्रचार में साहित्यकारों का विशेष योगदान रहा है। साहित्यकारों की लेखनी के जादू का प्रभाव असहयोग आन्दोलन पर स्पष्ट दिखाई देता है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के नायक स्वयं साहित्यकार व पत्रकार भी थे, अतः उनकी भूमिका और ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो गई थी। प्रस्तुत शोधपत्र में इन्हीं समस्त बिन्दुओं पर चर्चा की गई है। साहित्य समाज का दर्पण है। किसी भी देश की राजनीतिक गतिविधियों का प्रभाव वहाँ के साहित्य पर भी पड़ता है। साहित्यकार ही वह शक्ति है, जो सामाजिक चेतना जगा कर जनता को राजनीतिक आन्दोलन छेड़ने के लिए तैयार करता है। समाज को जागरूक करने में बुद्धिजीवी वर्ग की एक विशेष भूमिका होती है। साहित्यकार अपनी लेखनी के जादू से जनमानस के दिलो-दिमाग को झकझोर कर रख देते हैं। व्यक्ति को सोचने पर मजबूर कर देते हैं। छोटी-छोटी सामाजिक घटनाओं को साहित्य का विषय बनाकर उन्हें निबन्ध, कहानी, कविता, नाटक व उपन्यास के रूप में जनता के समक्ष लाते हैं। भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए महात्मा गाँधी जी ने तीन प्रमुख आन्दोलनों का संचालन किया। इनमें 1920-22 असहयोग आन्दोलन, 1930-32 सविनय अवज्ञा आन्दोलन, 1942 भारत छोड़ो आन्दोलन मुख्य हैं। इन तीनों आन्दोलनों का प्रभाव हिन्दी पत्रकारिता व समकालीन साहित्य पर स्पष्ट दिखाई देता है।

बीजशब्द- असहयोग आन्दोलन, साहित्यकार, सत्य-अहिंसा, महिलाएँ, रचनात्मक कार्य, आर्थिक आत्मनिर्भरता, स्वदेशी प्रचार।

पृष्ठभूमि-

सन् 1920 से 1942 तक का समय इतिहास में गाँधी युग के नाम से जाना जाता है। अतएव तत्कालीन परिस्थितियों व विचारधाराओं का साहित्य पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। इस युग का साहित्य गाँधीवादी विचारधारा से ओत-प्रोत था। हिन्दी साहित्य के अनेक लेखक स्वयं पत्रकार तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी थे। उन्होंने गाँधीवादी विचार धारा का खूब प्रचार-प्रसार किया। इनमें जैनेन्द्र, वियोगीहरि, मैथिली शरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त, सोहनलाल द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, महादेवी वर्मा, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चौहान, प्रेमचन्द, महावीर प्रसाद द्विवेदी, महामना मदन मोहन मालवीय, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। असहयोग आन्दोलन

की पृष्ठभूमि में अंग्रेज शासकों की दमन नीति का सबसे घृणास्पद उदाहरण अमृतसर का जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड था। हिन्दी साहित्यकारों ने इस क्रूर हत्याकाण्ड पर अनेक कविताएँ लिखी।

"पापी डायर के फायर से भूमि हुई सब लाल,

जलियाँवाले बाग के अन्दर जूझा मदनगोपाल।

कलेजे में गोली निकली,

सर बाँधे कफनवा हो शहीदों की टोली निकली"।[1]

असहयोग आन्दोलन को व्यापकता प्रदान करने के लिए महात्मा गाँधी ने इसका व्यापक कार्यक्रम तैयार किया, जिससे कि देश के प्रत्येक नागरिक की सहभागिता उसमें सुनिश्चित हो सके। इस कार्यक्रम में युवाओं, स्त्रियों, किसानों, विद्यार्थियों, दलितों, मजदूरों, हिन्दुओं, मुसलमानों सबका आह्वान किया। इस कार्यक्रम में स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार, चरखा चलाना, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, सूत कातना, मद्यनिषेध, शराब की दुकानों पर धरना देना, समाज में शोषित व दबी-कुचली जातियों के उद्धार के कार्यक्रम, स्त्री शिक्षा, हिन्दू-मुस्लिम एकता, समाज में महिलाओं को पुरुषों की बराबरी का दर्जा देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने जैसी बातों को शामिल किया गया। असहयोग आन्दोलन के मुख्य हथियार सत्य व अहिंसा थे। इस समय देश की राजनीतिक परिस्थितियाँ बड़ी जटिल थीं। सत्य व अहिंसा की स्पष्ट झलक तत्कालीन साहित्य में देखने को मिलती है। हरियाणा के लोकगीतों में इसकी स्पष्ट झलक देखने को मिलती है-

"बरछी तीर न तलवार जिसपे,

सत् अहिंसा का हथियार था जिसपे,

लिए हाथों में तिरंगा झन्डा,

फोडो अंग्रेजों का भान्डा"[2]

असहयोग आन्दोलन के समय हिन्दी साहित्य में छायावादी युग प्रारम्भ हो चुका था। छायावाद राष्ट्रीय चेतना से प्रभावित था। सत्य व अहिंसा की भावना से पूरे देश में एक नवीन दृष्टिकोण फैल गया था। उनके प्रभाव से विदेशी शासन का कठिन कारावास भी जनता के लिए तीर्थ स्थान बन गया। जेल यात्रा तीर्थ यात्रा हो गई और देश के लिए अपने शरीर को बलिदान करना स्वर्ग की प्राप्ति का साधन समझा जाने लगा। गाँधीवाद के प्रभाव का वर्णन करते हुए 'राष्ट्रकवि' मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी पुस्तक 'स्वदेश संगीत' में लिखा -

"अस्थिर किया टोपवालों को, गाँधी टोपीवालों ने,

शस्त्र बिना संग्राम किया है, इन माई के लालों ने।

अपने निश्चय पर ये दृढ़ हैं, मारो पीटो बन्द करो।

अजब बाँकपन दिखलाया है, इनकी सीधी चालों ने

यहाँ जमाई है अपनी जड़ पश्चिम के जिन पौधों ने,

असहयोग के फल उपजाए, उनकी ऊँची डालों ने।

क्या कर लिया मशीन गनों ने, संगीनों ने भालों ने ?

गोलों को भी उड़ा दिया है, यहाँ रूई के गोलों ने"[3]

असहयोग आन्दोलन को व्यापकता प्रदान करने तथा उसकी पृष्ठभूमि तैयार करने में साहित्य की अहम भूमिका है। अपनी इस भूमिका को निभाने में साहित्यकारों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। देशवासियों को धिक्कारते हुए मैथिली शरण गुप्त 'भारत भारती' में लिखते हैं "परन्तु क्या हम लोग सदा अवनति में पड़े रहेंगे? हमारे देखते-देखते जंगली जातियाँ तक उठकर हमसे आगे बढ़ जाएँ और हम वैसे ही पड़े रहें, इससे अधिक दुर्भाग्य की बात और क्या हो सकती है? क्या हम अपने मार्ग से यहाँ तक हट गए हैं कि अब उसे पा ही नहीं सकते? क्या सचमुच हमारी यह चिर निद्रा है"?[4]

स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार-

असहयोग आन्दोलन में सबसे अधिक जोर स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार कार्यक्रम को दिया गया तथा विदेशी वस्तुओं का हर स्थान पर बहिष्कार किया गया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में कवियों व लेखकों ने अपना पूर्ण सहयोग दिया। स्वदेशी की भावना की स्पष्ट छाप हमें प्रेमचन्द के उपन्यास 'गबन' में दिखाई देती है, उपन्यास के पात्र देवीदीन के माध्यम से प्रेमचन्द स्वदेशी वस्त्रों का प्रचार करते हुए दिखते हैं। "देवीदीन ने ऊनी और रेशमी कपड़ों के सैकड़ों नमूने निकालकर रख दिए, पाँच-छः रूपये गज से कोई कम का नहीं था। रमा ने नमूनों को उलट-पलट कर देखा और बोला-इतने महंगे कपड़े क्यों लाए दादा? और सस्ते न थे? सस्ते थे, मुदा विलायती थे। तुम विलायती कपड़े नहीं पहनते?... इधर बीस साल से तो नहीं लिए उधर की बात नहीं कहता। कुछ देशी दाम लग जाता है पर रूपया तो देश में ही रह जाता है... रमा ने लजाते हुए कहा तुम नियम के बड़े पक्के हो दादा। देवीदीन की मुद्रा सहसा तेजवान हो गई। उसकी बुझी हुई आँखें चमक उठी। देह की नसें तन गई। अकड़कर बोला-जिस देश में रहते हैं । जिसका अन्न-जल खाते हैं, उसके लिए इतना भी न करें तो धिक्कार है"[5]

असहयोग आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करने व उन्हें अधिक से अधिक संख्या में आन्दोलन से जोड़ने के लिए स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार, शराब की दुकानों पर धरना देना, चरखा चलाना, सूत तैयार करना जैसे आन्दोलन के महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों की जिम्मेदारी सीधे तौर पर महिलाओं को दी गई, ताकि अधिक से अधिक संख्या में महिलाओं को आन्दोलन से जोड़ने का सार्थक प्रयास हो सके। चरखे के प्रति महिलाओं के मन में आदर व सम्मान की भावना थी। हरियाणा के लोकगीतों में इसकी झलक दिखाई देती है। -

"पिया मन्नै इक चरखा ल्यादे, मै बी सूत बनाऊँगी हो मेरे राम

चालीस गज का झालर आला, दाम्मण (घागरा) एक सियाऊँगी

सीसा आली चमक चुन्दडी, खादी का मंगवाऊँगी

हाथ में आपणे झण्ड़ा तिरंगा, खादी आली ठाऊँगी हो मेरे राम"[6]

गाँधी जी का मानना था कि जब हम धर्म, जाति, ऊँच-नीच के भेदभाव को भुला देंगे, तभी स्वतंत्रता की सच्ची लड़ाई लड़ सकेंगे । धर्म के आधार पर कोई व्यक्ति ऊँचा या नीचा नहीं है, सभी वर्गों को समान रूप से अपने धार्मिक विचारों के अनुसार जीवन जीने का हक है। उनका कहना था- "हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, एक परमपिता की सन्तान हैं,

तो यह भेदभाव कैसा? उनका मानना था कि पूजा पाठ और भजन-कीर्तन किसी को सच्चा ईसाई, सच्चा मुसलमान व सच्चा हिन्दू नहीं बनाते, धर्म की सच्ची पहचान है जीवन में उसका आचरण"[7]

गाँधीवादी विचारधारा का साहित्य पर प्रभाव - गाँधी जी का नेतृत्व पाकर भारतीय जनता जाति, वर्ण तथा धर्म के भेदभाव को मिटाकर राष्ट्रीय एकता व स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए आतुर हो उठी। धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देने व उसे बनाए रखने के लिए साहित्यकारों ने कोई कमी नहीं छोड़ी। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की 'द्विवेदी काव्य माला' में हमें यही भाव देखने को मिलता है-

"बल दो हमें एक्य सिखलाओ, संभलो देश होश में आओ।

मातृभूमि सौभाग्य बढ़ाओ, मेरो सकल कलेश।

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई पर गावे सब भाई भाई।

सब के सब तेरे सौदाई, फूलो-फलो स्वदेश।"[8]

धार्मिक सद्भावना से ही एकता कायम की जा सकती है। मैथिलीशरण गुप्त 'भारत भारती' में लिखते हैं -

"आओ मिलें सब देश बान्धव, हार बनकर देश के।

साधक बनें सब प्रेम से, सुख शान्तिमय उद्देश्य के।

क्या साम्प्रदायिक भेद से है, ऐक्य मिट सकता अहो,।

बनती नहीं क्या एक माला, विविध फूलों से कहो"।[9]

साहित्यकार अपनी बात कहने का कोई न कोई माध्यम बना ही लेते हैं। उन्हें तो किसी भी माध्यम से जन-जन तक अपना सन्देश पहुँचाना होता है। कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने पुण्य के माध्यम से अपने भाव इस तरह प्रकट किए –

"चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।

चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।

चाह नहीं सम्राटों शव पर, हे हरि ड़ाला जाऊँ।

चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूं, भाग्य पर इठलाऊँ।

मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर में देना तुम फेंक।

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक"।[10]

सियाराम शरण गुप्त ने 'बापू नामक काव्य संग्रह में अन्य विषयों के साथ-साथ गाँधीजी की अहिंसात्मक नीतियों का भी उल्लेख किया-

"हिंसानल से शान्त नहीं होता हिंसानल,

जो सबका है, वही हमारा भी है मंगल।

मिला हमें चिर सत्य आज यह नूतन होकर,

हिंसा का है एक अहिंसा ही प्रत्युत्तर"।[11]

बालकृष्ण भट्ट के निबन्धों में हमें देशप्रेम की भावना के प्रत्यक्ष उदाहरण मिलते हैं। उन्होंने अपने निबन्धों में भारत के धन वैभव को लूटकर उससे मस्ती करने पर अंग्रेजों को धिक्कारते हुए लिखा है- "हमारी बदौलत विलायत के लोग बड़े गुलछर्रे उड़ा चुके हैं। उनका आमोद-प्रमोद, भोग-विलास यहीं के रूपये की बदौलत बढ़ता ही जाता है।... उचित था अब हमारी सहायता करते। विलायत के लोग आपस में चन्दा कर हिन्दुस्तान के खजाने में जो घाटा हुआ है, उसे पैसा भेज पूरा करते। नहीं तो हर महीने जो यहाँ का रूपया खींच लेते हैं, वही अब कम खींचते।"[12]

सियाराम शरण गुप्त हिन्दी जगत में गाँधीवादी साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने गाँधी जी के जीवन व आदर्शों पर 'बापू' नामक काव्य संग्रह लिख डाला तथा प्राचीन भारतीय वैभव का भी चित्रण किया-

"देश अरे मेरे देश, तेरी उच्चता में है दृढ़ नगेश,

अतल गम्भीरता में सागर है, मन की पवित्रता में गंगा की लहर"।[13]

मुंशी प्रेमचन्द के साहित्य में हमें यत्र-तत्र देशप्रेम, स्वदेशी की भावना व गाँधीवादी विचारधारा का प्रत्यक्ष प्रभाव उनकी कृतियों में देखने को मिलता है। गबन, गोदान, कर्मभूमि, रंगभूमि, निर्मला, मानसरोवर (कहानी संग्रह) ये सभी रचनाएँ देशभक्ति से ओत-प्रोत हैं। 'होली का उपहार' में उनकी अभिव्यक्ति कुछ इस प्रकार है- "एक नवयुवक अपनी मंगेतर के लिए एक विलायती साड़ी लेने हाशिम भाई की दुकान पर पहुँचता है, लेकिन दुकान पर धरना चल रहा है। नवयुवक अमरकान्त चोरी से पिछवाड़े से दुकान में पहुँचता है तथा विलायती साड़ी खरीद लेता है।... आन्दोलनकारी वह साड़ी छीन लेते हैं। धरने का नेतृत्व करने वाली नवयुवती अमरकान्त के अनुरोध पर साड़ी वापस कर देती है तथा विदेशी कपड़े खरीदने के लिए चोरों की तरह व्यवहार करने पर डांटती भी है।... जब वह अपनी मंगेतर के घर पहुँचता है, तब स्वदेशी आन्दोलन का नेतृत्व कर रही उस युवती सुखदा को वहाँ पाता है। अमरकान्त जब अपनी मंगेतर सुखदा को वह उपहार देता है तो वह बिना देखे फेंक देती है। तब अमरकान्त उसे दिखाता है कि यह विलायती नहीं बल्कि खद्दर की साडी है।... वह स्वदेशी आन्दोलन में भाग भी लेता है तथा होली के दिन पुलिस की लाठियाँ खाते हुए अपनी गिरफ्तारी भी देता है। अपने खून से होली के उपहार के रूप में अपनी मंगेतर सुखदा की मांग भर देता है।"[14]

जयशंकर प्रसाद ने देश के मंगलमय स्वरूप का चित्रण 'चन्द्रगुप्त' नाटक की वन्दना के रूप में किया -

"अरूण यह मधुमय देश हमारा,

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को

मिलता एक सहारा"।[15]

माखनलाल चतुर्वेदी को हिन्दी साहित्य में 'भारतीय आत्मा' के नाम से जाना जाता है। उनके काव्य में राष्ट्रीय भावनाओं, भारतीय गौरव व देशप्रेम की स्पष्ट अभिव्यक्ति हुई है। परतंत्रता एक अभिशाप है, जीवन का प्यारा मंत्र स्वतंत्रता है। यह हम सबका लक्ष्य होना चाहिए। स्वतंत्रता के लिए व्याकुलता का चित्रण करते हुए कवि के भाव कुछ इस प्रकार थे। -

"हो सौ बार विश्व में हा! हा! अरी दासता तेरा नाश,

इस मदान्ध कठपुतलों में हो स्वामी भक्त का क्यों कर बास ?

धन्यवीर वो रखते हैं, जो अपना जीवन सदा स्वतंत्र

फूँका नहीं किसी ने, मुझमें जीवन का यह प्यारा मंत्र"।[16]

गुलामी के इस दौर में भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति भी काफी शोचनीय थी। राजनैतिक चुनौतियों के साथ-साथ सामाजिक चुनौतियाँ भी कम न थीं। समाज में महिलाओं के प्रति व्याप्त अन्याय को भी दूर करने का प्रयास महात्मा गाँधी व भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के अन्य नेताओं के सदप्रयत्नों से सम्भव हुआ, महिलाओं के उत्थान की बात भी समय-समय पर राजनैतिक मंचों से रखी जाती थी। समाज में महिलाओं की जो दुर्दशा थी, उसका वर्णन मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत भारती' में किया है-

"निज नारियों के साथ यदि कर्तव्य अपना पालते,

अज्ञान के गहरे गड्ढे में जो न उसको डालते।

तो आज यो नर मूर्ख होकर, पतित क्यों होते यहाँ,

होती जहाँ जैसी स्त्रियाँ, वैसे पुरूष होते वहाँ।

पाले हुए पश-पक्षियों का, ध्यान तो रखते सभी,

पर नारियों की दुर्दशा, क्या देखते हैं हम सभी।

हमने स्वयं पशुवृत्ति का साधन बना डाला उन्हें,

संतान जनने भाग को, वसनान्न दे पाला उन्हें।"[17]

असहयोग आन्दोलन के दौरान अछूतोद्धार का भी व्यापक कार्यक्रम चलाया गया। साहित्यकारों ने अछूतों की वेदना को वाणी दी। सियाराम शरण गुप्त ने 'एक फूल की चाह' में एक ऐसी बालिका की करुण कथा का वर्णन किया है, जिसका पिता उसे महामारी से बचाने के लिए देवी का प्रसाद पाने मन्दिर जाता है। सवर्ण समाज उसे बन्दी बना लेता है। इस बीच वह बालिका संसार छोड़ देती है। उसका पिता चीख-चीख कर कहता है-

"माँ के भक्त हुए तुम कैसे,

करके यह विचार खोटा।

माँ के सम्मुख ही माँ का तुम,

गौरव करते हो छोटा"[18]

तत्कालीन साहित्य ने स्त्री-पुरुषों को आत्मिक रूप से शक्तिशाली बनने की प्रेरणा दी। इसी प्रेरणा की ओर इशारा करते हुए माखनलाल चतुर्वेदी लिखते हैं-

"चूड़ियाँ बहुत हुई कलाइयों पर प्यारे! भुज दण्ड सजा दो,

तीर कमानों से श्रृंगार दो, जरा जिरह बख्तर पहना दो।

किन्तु आज तो इस मुरली को, रणभेरी का डंका कर लो,

या कर लो पानी वाली उदार मार लो भर लो"।[19]

कवि सोहनलाल द्विवेदी महात्मा गाँधी को युगावतार मानते थे। सम्पूर्ण राजनीतिक व सामाजिक ताना बाना गाँधी जी के इर्द-गिर्द ही बुना जा रहा था-

"चल पड़े जिधर दो डग-मग में,

चल पड़े कोटि पग उसी ओर।

पड़ गई जिधर भी दृष्टि, बढ़ गए कोटि पग उसी ओर

जिसके सिर पर निजधरा हा, उसके सिर रक्षक कोटि हाथ

जिस पर निज मस्तक झुका दिया, झुक गए उसी पर कोटि माथ"[20]

देश को आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रदान करने के लिए महात्मा गाँधी ने पूरे देश में चरखे का प्रचार किया, जिससे सूत कातकर लोग अपना पेट भर सकें । वे काम के अनुसार पारिश्रमिक देने के पक्ष में थे। उन्होंने लघु व कुटीर उद्योग लगाने पर जोर दिया, ताकि प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार मिले तथा कोई व्यक्ति भूखा न मरे। भोजपुरी लोकगीतों में चरखे का महत्त्व वर्णित है-

"गाँधी जी का चरखवा जी प्यारा गाँधी का

जब चरखा चले, तब मन लागा करे।

पेट बोला करे, गाँधी का

तब चरखा चले, तब करखा मिले

कुरूता धोती मिले, लहँगा साड़ी मिले"[21]

साहित्यकारों ने असहयोग आन्दोलन को अखिल भारतीय आन्दोलन बना दिया। तत्कालीन साहित्यकार सफल पत्रकार की भूमिका भी बखूबी निभा रहे थे। असहयोग कार्यक्रमों को विभिन्न माध्यमों से जनता तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य साहित्यकारों व पत्रकारों द्वारा किया गया। मैथिलीशरण गुप्त इस पूरे कार्यक्रम की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं– "महात्मा गाँधी ने ही पहले-पहल इस विरोध को एक व्यापक अखिल भारतीय रूप दिया था। इस प्रकार चारों तरफ जेल जाने की जो सनक पैदा हुई थी, वह उसी सार्वजनिक विरोध का प्रकाश था, जो मानो अट्टारियों की छतों पर पुकार-पुकार कर कह रहा था- हम तेरी जेलों से नहीं डरते, हम किसी बात से नहीं डरते, हम स्वराज्य चाहते हैं। तू जो चाहे सो कर। हमें लेशमात्र परवाह नहीं है। इस मौके पर अहिंसा व असहयोग के नारे ने वह काम किया जो बम और पिस्तौल नहीं कर सकते थे। ब्रिटिश शासक हैरान थे कि इस आन्दोलन का कैसे मुकाबला किया जाए।"[22]

निष्कर्ष-

इस प्रकार हम देखते हैं कि असहयोग आन्दोलन के कार्यक्रमों की स्पष्ट छाप हमें हिन्दी साहित्य में देखने को मिलती है। हिन्दी लेखन के क्षेत्र में स्वतंत्र विचारधारा का प्रतिपादन हुआ। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को सफल बनाने में साहित्यकारों द्वारा दिए गए योगदान को हम कम करके नहीं आंक सकते। साहित्यकारों ने जन-जन में आजादी प्राप्त करने की ललक पैदा की। अपनी कविताओं, लेखों, कहानियों, नाटकों, उपन्यासों के माध्यम से आजादी प्राप्त करने का संदेश घर-घर पहुँचाया। साहित्यकारों की लेखनी का जादू ही था जो कि भारतीय जनमानस स्वतंत्रता प्राप्ति के मार्ग पर निरन्तर अग्रसर होता चला गया।

सन्दर्भ-सूची-

1. नरेश चतुर्वेदी (सम्पादक) राष्ट्रीय कवितायेँ, 1986, पृ०सं० 10
2. साधू राम शारदा, सम्पादक, हरियाणा के लोकगीत, 1970, पृ०सं० 247
3. मैथिलीशरण गुप्त 'स्वदेश संगीत' प्रथम संस्करण, 1910, पृ०सं० 128-31 तक
4. मैथिलीशरण गुप्त 'भारत भारती' प्रथम संस्करण, 1912, पृ०सं० 02
5. प्रेमचन्द 'गबन' 1973, पृ०सं० 144
6. साधू राम शारदा, सम्पादक, हरियाणा के लोकगीत, 1970, पृ०सं० 299
7. बी० आर० नन्दा, महात्मा गाँधी एक जीवनी, 1958, पृ०सं० 61
8. महावीर प्रसाद द्विवेदी, 'द्विवेदी काव्य माला' 1940, पृ०सं० 453-454
9. मैथिलीशरण गुप्त 'भारत भारती' 1912, पृ०सं० 157
10. विद्यानाथ गुप्त, हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना, 1966, पृ०सं० 328
11. सुधेश, आधुनिक हिंदी व उर्दू काव्य की प्रवृत्तियाँ, 1974, पृ०सं० 246
12. लक्ष्मी शंकर व्यास, सम्पादक, बालकृष्ण भट्ट के निबन्धों का संग्रह, 1983, पृ०सं० 258
13. सियाराम शरण गुप्त, बापू , 1937, पृ०सं० 58
14. कमल किशोर गोयनका, प्रेमचन्द विश्वकोश, भाग -3, 1981, पृ०सं० 462
15. जयशंकर प्रसाद, चन्द्रगुप्त नाटक, 1931, पृ०सं० 58
16. कृष्णदेव शर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी व्यक्तित्व एवं कृतित्व, 1979, पृ०सं० 566-68
17. मैथिलीशरण गुप्त, भारत भारती, 1912, पृ०सं० 138
18. श्रीनिवास शर्मा, हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, 1977, पृ०सं० 32

19. 19 सुधेश, आधुनिक हिंदी व उर्दू काव्य की प्रवृत्तियाँ, 1974, पृ०सं० 353

20. राकेश गुप्त, सम्पादक, सोहनलाल द्विवेदी ग्रन्थावली, 1986, पृ०सं० 04, 05

21. श्रीधर मिश्र, भोजपुरी लोकगीतों के विविध आयाम, 1961, पृ०सं० 166

22. विश्वामित्र उपाध्याय भारतीय क्रन्तिकारी आन्दोलन तथा हिंदी साहित्य, 1986, पृ०सं० 260